WORLD खबर EXPRESS

WORLD
खबर एक्सप्रेस

रविवार 07 मई, 2023 | अंक - 370

www.worldkhabarexpress.media
www.worldkhabarexpress.com

भिंडी फसल का किसान भाई करें प्रबंधन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ. बिजेन्द्र सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम मे कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के कृषि वैज्ञानिकों ने आज कई गांवों के किसानों के खेतों का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने भिंडी फसल के प्रबंधन पर किसानों को जानकारियां दी। इस दौरान केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि भिंडी विटामिन सी का एक उत्तम स्रोत है विटामिन सी जल में घुलनशील है जो शरीर में प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त भिंडी में प्रोटीन, विटामिन, कैल्शियम, पोटेशियम, मैग्नीशियम एवं लोहा इत्यादि तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। भिंडी में कैलोरी की मात्रा काफी कम होती है ।जो सेहत के लिए फायदेमंद होती है उन्होंने बताया कि अल्सर एवं मधुमेह रोग में भिंडी का प्रयोग करना लाभप्रद पाया गया है। भिंडी में एंटी ऑक्सीडेंट भी प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं जो गंभीर बीमारियों के जोखिम को कम करता है। डॉक्टर खान द्वारा यह भी बताया गया कि भिंडी में एक प्रकार का प्रोटीन होता है जिसे लेक्टिन कहा जाता है जो मानव शरीर में कैंसर की कोशिकाओं की वृद्धि को रोकता है औसतन एक कप (100 ग्राम कच्ची भिंडी) में 33 कैलोरी ऊर्जा, 1.39 ग्राम प्रोटीन, 23 मिलीग्राम विटामिन सी, 82 मिलीग्राम कैल्शियम, 299 मिलीग्राम पोटैशियम, 57 ग्राम मैग्नीशियम, 0.62 मिलीग्राम लोहा पाए जाने के कारण इसे महत्वपूर्ण सब्जी मानते हैं। उन्होंने कहा कि ग्रीष्मकालीन भिंडी वर्तमान समय में लगभग डेढ़ से दो माह की हो गई है जिससे फलों की तोड़ाई का कार्य भी चल रहा है। जब पौधों में फलियां नरम खाने योग्य हो तो उन्हें तोड़ लेना चाहिए। पौधे पर सभी फल एक साथ तैयार नहीं होते हैं इसलिए फलियों की हर दूसरे तीसरे दिन तोड़ाई करते रहना चाहिए। मृदा वैज्ञानिक ने बताया कि अधिक उपज प्राप्त करने के लिए भिंडी की खड़ी फसल में नत्रजन एवं सूछम पोषक तत्व युक्त उर्वरक का प्रयोग करें। उन्होंने बताया कि भिंडी फसल में सफेद मक्खी तथा हरा फुदका जैसे प्रमुख हानिकारक कीटों का प्रकोप होता है जिसके नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड (3 मिलीलीटर मात्रा प्रति 10 लीटर पानी) या डाईमेथोयट (1 ग्राम मात्रा 1 लीटर पानी) का दो-तीन बार छिड़काव करना चाहिए तथा फली बेधक कीट का प्रकोप होने पर ट्राईकोग्रामा नामक परजीवी के द्वारा जैविक विधि से नियंत्रण करें ।पीला मोजेक रोग की रोकथाम के लिए इमिडाक्लोप्रिड का छिड़काव करें। पाउडरी मिलडयू रोग के लक्षण दिखाई देने पर 2 ग्राम कैराथेन या सल्फैक्स प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर दो-तीन छिड़काव करना चाहिए। इस अवसर पर ग्राम कुंदनपुर के बृजेश प्रगतिशील किसान बृजेश सिंह एवं राजेश सिंह सहित अन्य किसान उपस्थित रहे।

तर-प्रदेश,राजस्थान,बिहार,महाराष्ट्र,गुजरात,संघ प्रदेश,से एक साथ प्रसारित

RNI NO - UTTHIN/2018/76731

हिन्दी दैनिक

गांव देहात की खबर,शहर पर भी नजर

दि ग्राम टुडे

गर्मी में मूंग,उर्द फसल के प्रबंधन पर

किसान दें विशेष ध्यान..डॉ मनोज कटियार

दि ग्राम टुडे, कानपुर। (मीनाक्षी राहुल सोनकर)

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ.बिजेंद्र सिंह के निर्देश के क्रम में आज श्वविद्यालय के दलहन वैज्ञानिक डॉ.मनोज कटियार ने प्रेस नोट जारी कर कहा है। कि ग्रीष्मकालीन मूंग का क्षेत्रफल उत्तर प्रदेश में लगभग 42000 हेक्टेयर क्षेत्रफल है। जबकि कानपुर मंडल में ग्रीष्मकालीन मूंग का क्षेत्रफल लगभग 10829 हेक्टेयर क्षेत्रफल है।उन्होंने कहा की ग्रीष्मकालीन मूंग की बुवाई किसान भाई कर चुके हैं अब ग्रीष्मकालीन मूंग का प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है। ग्रीष्मकालीन मूंग में सबसे महत्वपूर्ण जल प्रबंधन एवं सिंचाई व्यवस्था होती है। डॉक्टर कटियार ने

कहा कि किसान भाई मूंग की फसल में पहली सिंचाई बुवाई के 20 दिन पर ही करे। अथवा तापमान के बढ़ने पर जरूरत के अनुसार सिंचाई किसान भाई पहले भी कर सकते हैं ।प्रथम सिंचाई के बाद आवश्यकता अनुसार 10 से 12 दिनों के अंतराल पर किसान भाई सिंचाई अवश्य मूंग की फसल में करते रहे। गर्मी की मूंग की फसल में कुल सिंचाई तीन से चार की आवश्यकता होती है। हमेशा किसान भाई यह बात याद रखें कि शाम के समय जब हवा न चल रही हो तब सिंचाई करना चाहिए। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि मूंग की फसल में कीट नियंत्रण के लिए किसान डाईमेथॉट 1000 मिली लीटर प्रति 600 लीटर पानी या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल प्रति 600 लीटर पानी में 125 मिलीलीटर के हिसाब से छिड़काव करें । उन्होंने बताया कि गर्मी की मूंग 60 से 65 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है फसल कटाई या फलियों की तूड़ाई के 5 दिन पहले सिंचाई देना अवश्य बंद कर दें। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ. खलील खान ने किसान भाइयों को सलाह दी है कि मूंग की कटाई की अपेक्षा फलियों की तुड़ाई करना ज्यादा हितकारी होगा क्योंकि फली तोड़ने के बाद फसल को खेत में ही रोटावेटर की सहायता से पलटने पर हरी खाद का काम करेगी तथा मृदा की उपजाऊ शक्ति में बढ़ोतरी होगी।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 14 अंक : 302 कानपुर, सोमवार 08 मई 2023 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

भिंड़ी में प्रचुर मात्रा में पाए जाते प्रोटीन, विटामिन, कैल्शियम पोटेशियम, मैग्नीशियम एवं लोहा आदि

कानपुर । सीएसए विवि के कुलपति डॉ बिजेन्द्र सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम मे कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के कृषि वैज्ञानिकों ने आज कई गांवों के किसानों के खेतों का दौरा किया इस दौरान उन्होंने भिंडी फसल के प्रबंधन पर किसानों को जानकारियां दी। इस दौरान केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि भिंडी विटामिन सी का एक उत्तम स्रोत है विटामिन सी जल में घुलनशील है जो शरीर में प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त भिंडी में प्रोटीनए विटामिनए कैल्शियमए पोटेशियमए मैग्नीशियम एवं लोहा इत्यादि तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। भिंडी में कैलोरी की मात्रा काफी कम होती है जो सेहत के लिए फायदेमंद होती है उन्होंने बताया कि अल्सर एवं मधुमेह रोग में भिंडी का प्रयोग करना लाभप्रद पाया गया है। भिंडी में एंटी ऑक्सीडेंट भी प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं जो गंभीर बीमारियों के जोखिम को कम करता है डॉक्टर खान द्वारा यह भी बताया गया कि भिंडी में एक प्रकार का प्रोटीन होता है जिसे लेक्टिन कहा जाता है जो मानव शरीर में कैंसर की कोशिकाओं की वृद्धि को रोकता है औसतन एक कप ;100 ग्राम कच्ची भिंडीद्ध में 33 कैलोरी ऊर्जाए 1ण्39 ग्राम प्रोटीनए 23 मिलीग्राम विटामिन सीए 82 मिलीग्राम कैल्शियमए 299 मिलीग्राम पोटैशियमए 57 ग्राम मैग्नीशियमए 0ण्62

मिलीग्राम लोहा पाए जाने के कारण इसे महत्वपूर्ण सब्जी मानते हैं। उन्होंने कहा कि ग्रीष्मकालीन भिंडी वर्तमान समय में लगभग डेढ़ से दो माह की हो गई है जिससे फलों की तोड़ाई का कार्य भी चल रहा है। जब पौधों में फलियां नरम खाने योग्य हो तो उन्हें तोड़ लेना चाहिए।पौधे पर सभी फल एक साथ तैयार नहीं होते हैं इसलिए फलियों की हर दूसरे तीसरे दिन तोड़ाई करते रहना चाहिए । मृदा वैज्ञानिक ने बताया कि अधिक उपज प्राप्त करने के लिए भिंडी की खड़ी फसल में नत्रजन एवं सूछम पोषक तत्व युक्त उर्वरक का प्रयोग करें। उन्होंने बताया कि भिंडी फसल में सफेद मक्खी तथा हरा फुदका जैसे प्रमुख हानिकारक कीटों का प्रकोप होता है जिसके नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड; 3 मिलीलीटर मात्रा प्रति 10 लीटर पानी द्ध या डाईमेथोयट ;1 ग्राम मात्रा 1 लीटर पानीद्ध का दो.तीन बार छिड़काव करना चाहिए तथा फली बेधक कीट का प्रकोप होने पर ट्राईको ग्रामा नामक परजीवी के द्वारा जैविक विधि से नियंत्रण करें।पीला मोजेक रोग की रोकथाम के लिए इमिडाक्लोप्रिड का छिड़काव करें ।

पाउडरी मिलडयू रोग के लक्षण दिखाई देने पर 2 ग्राम कैराथेन या सल्फैक्स प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर दो.तीन छिड़काव करना चाहिए। इस अवसर पर ग्राम कुंदनपुर के बृजेश प्रगतिशील किसान बृजेश सिंह एवं राजेश सिंह सहित अन्य किसान उपस्थित रहे।

लाइव स्ट्रीमिंग के दौरान जज बोलते वक्त... 12

मुरादाबाद एसडीएम के ड्राइवर की हत्या 10

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ
वर्षः 14 | अंकः 203
मूल्यः ₹3.00/-
पेज : 12
रविवार | 07 मई, 2023

मूंग/उर्द की अधिक पैदावार के लिए दी जानकारी

जन एक्सप्रेस, कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के दलहन वैज्ञानिक डॉ.मनोज कटियार ने बीते दिन शनिवार को गर्मी में मूंग/उर्द फसल के प्रबंधन विषय पर प्रेस नोट जारी की। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में ग्रीष्मकालीन मूंग का क्षेत्रफल लगभग 42000 हेक्टेयर क्षेत्रफल है। वही कानपुर मंडल में ग्रीष्मकालीन मूंग का क्षेत्रफल लगभग 10829 हेक्टेयर है। किसान ग्रीष्मकालीन मूंग की बुवाई कर चुके हैं। जिसमे सबसे महत्वपूर्ण जल प्रबंधन एवं सिंचाई व्यवस्था होती है। उन्होंने कहा कि किसान मूंग की फसल में पहली सिंचाई बुवाई के 20 दिन पर व तापमान बढ़ने पर जरूरत के अनुसार पहले भी कर सकते हैं । उन्होंने बताया कि गर्मी की मूंग की फसल में तीन से चार बार सिंचाई की आवश्यकता होती है।उन्होंने किसानों को मूंग की फसल में कीट नियंत्रण के लिए किसान डाईमेथॉट 1000 मिली लीटर प्रति 600 लीटर पानी या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल प्रति 600 लीटर पानी में 125 मिलीलीटर के हिसाब से छिड़काव करने की सलाह दी। डॉ. खलील खान ने किसानो को बताया कि फली तोड़ने के बाद फसल को खेत में ही रोटावेटर की सहायता से पलटने पर हरी खाद का काम करेगी तथा मृदा की उपजाऊ शक्ति में बढ़ोत्तरी होगी।

वर्ष-17 अंक-123 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रुपए कानपुर, रविवार 07 मई 2023

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी, ऐटा, हरदोई, उन्नाव, कानपुर देहात में प्रसारित

RNI N.UPHIN/2007/27090

दैनिक नगर छाया

आप की आवाज़.....

www.nagarchhaya.com

गर्मी में मूंग व उर्द फसल के प्रबंधन पर किसान दें विशेष ध्यानः डॉ मनोज कटियार

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ.बिजेंद्र सिंह के निर्देश के क्रम में आज श्वविद्यालय के दलहन वैज्ञानिक डॉ.मनोज कटियार ने प्रेस नोट जारी कर कहा है। कि ग्रीष्मकालीन मूंग का क्षेत्रफल उत्तर प्रदेश में लगभग 42000 हेक्टेयर क्षेत्रफल है। जबकि कानपुर मंडल में ग्रीष्मकालीन मूंग का क्षेत्रफल लगभग 10829 हेक्टेयर क्षेत्रफल है।उन्होंने कहा की ग्रीष्मकालीन मूंग की बुवाई किसान भाई कर चुके हैं अब ग्रीष्मकालीन मूंग का प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है। ग्रीष्मकालीन मूंग में सबसे महत्वपूर्ण जल प्रबंधन एवं सिंचाई व्यवस्था होती है। डॉक्टर कटियार ने कहा कि किसान भाई मूंग की फसल में पहली सिंचाई बुवाई के 20 दिन पर ही करे। अथवा तापमान के बढ़ने पर जरूरत के अनुसार सिंचाई किसान भाई पहले भी कर सकते हैं ।प्रथम सिंचाई के बाद आवश्यकता अनुसार 10 से 12 दिनों के अंतराल पर किसान भाई सिंचाई अवश्य मूंग की फसल में करते रहे। गर्मी की मूंग की फसल में कुल सिंचाई तीन से चार की आवश्यकता होती है। हमेशा किसान भाई यह बात याद रखें कि शाम के समय जब हवा न चल रही हो तब सिंचाई करना चाहिए। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि मूंग की फसल में कीट नियंत्रण के लिए किसान डाईमेथॉट 1000 मिली लीटर प्रति 600 लीटर पानी या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल प्रति 600 लीटर पानी में 125 मिलीलीटर के हिसाब से छिड़काव करें । उन्होंने बताया कि गर्मी की मूंग 60 से 65 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है फसल कटाई या फलियों की तुड़ाई के 5 दिन पहले सिंचाई देना अवश्य बंद कर दें। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ. खलील खान ने किसान भाइयों को सलाह दी है कि मूंग की कटाई की अपेक्षा फलियों की तुड़ाई करना ज्यादा हितकारी होगा क्योंकि फली तोड़ने के बाद फसल को खेत में ही रोटावेटर की सहायता से पलटने पर हरी खाद का काम करेगी तथा मृदा की उपजाऊ शक्ति में बढ़ोतरी होगी।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 14 अंक : 301 कानपुर, रविवार 07 मई 2023 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

गर्मी में मूंग,उर्द फसल के प्रबंधन पर किसान दें विशेष ध्यान: डॉ मनोज

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉण्बिजेंद्र सिंह के निर्देश के क्रम में विश्वविद्यालय के दलहन वैज्ञानिक डॉण्मनोज कटियार ने प्रेस नोट जारी कर कहा है। कि ग्रीष्मकालीन मूंग का क्षेत्रफल उत्तर प्रदेश में लगभग 42000 हेक्टेयर क्षेत्रफल है। जबकि कानपुर मंडल में ग्रीष्मकालीन मूंग का क्षेत्रफल लगभग 10829 हेक्टेयर क्षेत्रफल है।उन्होंने कहा की ग्रीष्मकालीन मूंग की बुवाई किसान भाई कर चुके हैं अब ग्रीष्म कालीन मूंग का प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है। ग्रीष्म कालीन मूंग में सबसे महत्वपूर्ण जल प्रबंधन एवं सिंचाई व्यवस्था होती है। डॉक्टर कटियार ने कहा कि किसान भाई मूंग की फसल में पहली सिंचाई बुवाई के 20 दिन पर ही करे। अथवा तापमान के बढ़ने पर जरूरत के अनुसार सिंचाई किसान भाई पहले भी कर सकते हैं ।प्रथम सिंचाई के बाद आवश्यकता अनुसार 10 से 12 दिनों के

अंतराल पर किसान भाई सिंचाई अवश्य मूंग की फसल में करते रहे। गर्मी की मूंग की फसल में कुल सिंचाई तीन से चार की आवश्यकता होती है। हमेशा किसान भाई यह बात याद रखें कि शाम के समय जब हवा न चल रही हो तब सिंचाई करना चाहिए। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि मूंग की फसल में कीट नियंत्रण के लिए किसान डाईमेथॉट 1000 मिली लीटर प्रति 600 लीटर पानी या इमिडाक्लोप्रिड 17ण्8 एसएल प्रति 600 लीटर पानी में 125 मिलीलीटर के हिसाब से छिड़काव करें । उन्होंने बताया कि गर्मी की मूंग 60 से 65 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है फसल कटाई या फलियों की तूड़ाई के 5 दिन पहले सिंचाई देना अवश्य बंद कर दें। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉण् खलील खान ने किसान भाइयों को सलाह दी है कि मूंग की कटाई की अपेक्षा फलियों की तुड़ाई करना ज्यादा हितकारी होगा क्योंकि फली तोड़ने के बाद फसल को खेत में ही रोटावेटर की सहायता से पलटने पर हरी खाद का काम करेगी तथा मृदा की उपजाऊ शक्ति में बढ़ोतरी होगी।